



नेशनल लेवल पर आयोजित सेमिनार में देश भर के शुगर एक्सपर्ट्स शामिल हुए.



PICS: DAINIK JAGRAN | NEXT

## ‘अब गन्ने से चीनी नहीं सीधे एथेनॉल बनाइए’

330

लाख टन प्रति वर्ष इंडिया में चीनी का प्रोडक्शन हो रहा

330

करोड़ लीटर एथेनॉल की जरूरत पेट्रोल में मिलाने के लिए

150

करोड़ लीटर हो रहा है फिलहाल एथेनॉल का प्रोडक्शन

44

सौ करोड़ का बजट सेंट्रल गवर्नमेंट ने दिया शुगर इंडस्ट्री को

112

नई डिस्टिलरी पुरे देश में खोली जाएगी एथेनॉल के लिए

12

नई डिस्टिलरी इस सेशन से चालू की जा रही है यूपी में भी

► देय को पेट्रोल में मिश्रण के लिए प्रति वर्ष 330 करोड़ लीटर एथेनॉल की जरूरत पड़ती है

kanpur@next.co.in

**KANPUR (16 Oct):** चीनी उत्पादन में इंडिया दुनिया में पहले नंबर पर पहुंच गया है. सेंट्रल गवर्नमेंट ने शुगर मिलों से गन्ने के रस से डायरेक्ट एथेनॉल बनाने को कहा है जिसकी कीमत उन्हें 59.19 रुपये प्रति लीटर मिलेगी. इसके लिए सिर्फ यूपी में 12 नई डिस्टिलरी खुलेंगी. जहां एथेनॉल का उत्पादन किया जाएगा. इस बार देश में करीब 70 लाख मीट्रिक टन ज्यादा शुगर का प्रोडक्शन हुआ है. यह जानकारी 'चीनी नहीं एथेनॉल बनाओ' टॉपिक पर आयोजित नेशनल सेमिनार में एनएसआई डायरेक्टर प्रो. नरेंद्र मोहन अग्रवाल ने दी. प्रो. नरेंद्र मोहन ने बताया कि शुगर मिलों में इयर 2018-19 का गन्ना पिछाई सेशन 1 अक्टूबर से शुरू हो गया है.

### ब्राजीली शुगर प्लेक्सी मॉडल

सेंट्रल गवर्नमेंट ने चीनी मिलों को ब्राजील मॉडल पर प्लेक्सी फैक्ट्री के कल्चर पर काम करने की सलाह दी है. साथ ही शुगर इंडस्ट्री को शुगर केन से एथेनॉल बनाने को कहा है. इसके लिए गवर्नमेंट ने करीब 4400 करोड़ का बजट आवंटित करने के साथ देश में 112 डिस्टिलरी को भी ग्रीन सिग्नल दिया गया है. जिसमें 40 नई डिस्टिलरी शुरू की जा रही हैं. यूपी में भी 12 नई डिस्टिलरी इस सेशन में चालू की जा रही हैं.

### 10 परसेंट की मिक्सिंग

सेमिनार का इन्फ्रिगेशन कमिशनर कानपुर जोन एससी शर्मा ने किया. कमिशनर ने कहा कि देश को इस टाइम पेट्रोल में मिश्रण के लिए 330 करोड़ लीटर एथेनॉल की जरूरत है. जब इतना एथेनॉल मिलेगा तो पेट्रोल में 10 परसेंट मिक्सिंग की जा सकेगी. अभी देश में करीब

गन्ने के रस से एथेनॉल बनाने के लिए गवर्नमेंट ने दिया 4400 करोड़ का बजट, 112 नई डिस्टिलरी खोली जाएगी

150 करोड़ लीटर एथेनॉल का प्रोडक्शन हो रहा है. शीरे से बनने वाले एथेनॉल की कीमत 43 रुपये 46 पैसे पर लीटर मिलती है.

### एथेनॉल की टेक्नोलॉजी बताई

सेमिनार में तमिलनाडु शुगर कॉरपोरेशन के चीफ शुगर टेक्नोलॉजिस्ट मुथु वेलापंत ने शुगर इंडस्ट्री को एथेनॉल बनाने वाली न्यू टेक्नोलॉजी का प्रजेंटेशन दिया. एनएसआई के प्रो. स्वेन ने भी इस बारे में विस्तार से जानकारी दी है. प्रोग्राम में इसजेक के गौरव अवस्थी, संजय अवस्थी, संदीप, डॉ. सीमा परेहा, डॉ. आशुतोष बाजपेई मौजूद रहे.

## चीनी उत्पादन में नंबर वन, अब इथेनॉल बढ़ाने का लक्ष्य

**जागरण संवाददाता, कानपुर :** चीनी उत्पादन में ब्राजील को पछाड़कर भारत नंबर वन हो गया है। इस साल देश में 322 लाख टन चीनी का उत्पादन हुआ जो खपत से 72 लाख टन अधिक है। अब गन्ने के रस से सीधे इथेनॉल बनाने की तैयारी चल रही है। अभी तक अंतिम शीरे से इसका निर्माण किया जाता था। यह बात तमिलनाडु शुगर कॉरपोरेशन के चीफ शुगर टेक्नोलॉजिस्ट मुथुवेलापन ने कही। वे राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में इथेनॉल व एल्कोहल उत्पादन विषय पर आयोजित सेमिनार को संबोधित कर रहे थे।

एनएसआई व द शुगर टेक्नोलॉजिस्ट एसोसिएशन ऑफ इंडिया के संयुक्त तत्वावधान में हुए सेमिनार में उन्होंने कहा कि चीनी मिलों को ऐसी फैक्ट्रियों में बदलने की जरूरत है जो मांग व लाभ के अनुसार चीनी व इथेनॉल का



इथेनॉल उत्पादन पर सेमिनार में निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन को स्मृति चिन्ह देते शुगर कॉरपोरेशन के चीफ शुगर टेक्नोलॉजिस्ट मुथुवेलापन व बिरला चीनी मिल के आसवन प्रमुख गोविंद मिश्रा

उत्पादन कर सकें। उन्होंने ऐसा आर्थिक मॉडल प्रस्तुत किया जो एक ओर चीन की मांग व आपूर्ति को सुनिश्चित करता है तो दूसरी ओर इथेनॉल के उत्पादन को

बढ़ाता है। सेमिनार में संस्थान के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने बताया कि एक अनुमान है कि कच्चा तेल 50 साल में खत्म हो जाएगा इसलिए पेट्रोल में दस फीसद

● पेट्रोल में दस फीसद इथेनॉल मिलाने की जरूरत पूरी करने के लिए गन्ने के रस से होगा निर्माण

इथेनॉल मिलाने का लक्ष्य रखा गया है। इसके लिए सरकार ने नई मूल्य नीति की घोषणा की है।

गन्ने के रस से सीधे बने इथेनॉल को सरकार 59.19 रुपये प्रति लीटर के हिसाब से खरीदेगी, जबकि पारंपरिक तरीके से निर्मित इथेनॉल का मूल्य 43.46 रुपये प्रति लीटर रहेगा। सरकार ने इथेनॉल का उत्पादन बढ़ाने के लिए 4400 करोड़ का बजट रखा है। इस मौके पर बिरला चीनी मिल के आसवन प्रमुख गोविंद मिश्रा, एक्सेल इंडस्ट्रीज पुणे के प्रबंध निदेशक चिंचवालकर व आइएसजीईसी नोएडा से गौरव अवस्थी समेत अन्य विशेषज्ञ रहे।



# तकनीक को अपना कर डिस्टिलरियों की कार्य क्षमता बढ़ायें

(आज समाचार सेवा)

कानपुर, 16 अक्टूबर। राष्ट्रीय सरकार संस्थान कानपुर एवं दि शुगर टेक्नोलॉजिस्ट्स एसोसिएशन आफ इंडिया की ओर से टेक्नो-इकोनामिक वैबिलिटी आफ शुगरकेन जूस या बी हैवी मोलासेस एस एल्टेमेट फीड स्टॉक फार इथेनाल प्रोडक्शन विषय पर आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार का उद्घाटन करते हुए आयुक्त सुभाष चंद्र शर्मा ने कहा कि वैल्यू एडिशन एवं साफ सुथरी ऊर्जा उत्पादन के लिए शर्करा उद्योग को आगे आना चाहिये।

मोलासेस के अलावा अन्य फीड स्टॉक से इथेनाल उत्पादन पर जोर दिया, ताकि पेट्रोल में 10 प्रतिशत इथेनाल ब्लेंडिंग के लक्ष्य पूरा किया जा सके। अध्यक्ष संजय अवस्थी ने कहा कि इफ लुयेंट ट्रीटमेंट की नई तकनीकों का प्रयोग करते हुए डिस्टिलरियों की आपरेशन अवधि बढ़ाने पर बल दिया। बायो कम्पोजिटिंग तकनीक का प्रयोग करने वाली डिस्टिलरियों को वर्ष में 270 दिन काम करने की अनुमति होती है। परंतु इन्सेनरेशन ब्यायलर जिसमें धन के रूप में इफ लुयेंट का प्रयोग किया जाता है। स्थापित करने वाली डिस्टिलरियों में वर्ष में 330 दिन कार्य करने की अनुमति होती है। तकनीक को अपना कर डिस्टिलरियों की कार्य क्षमता 20 प्रतिशत तक बढ़ाई जा



सेमिनार में मंडलायुक्त सुभाष चंद्र शर्मा के साथ विशेषज्ञ।

## ● पेट्रोल में 10 प्रतिशत इथेनाल ब्लेंडिंग के लक्ष्य लंबा विदेशी मुद्रा की बचत होगी

संस्थान के निदेशक नरेंद्र मोहन ने 10 प्रतिशत इथेनाल ब्लेंडिंग की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए देश के इथेनाल मांग एवं आपूर्ति की स्थिति का परिदृश्य प्रस्तुत किया। वर्ष 2017-18 के दौरान देश अब तक की सबसे अधिक लगभग पांच प्रतिशत ब्लेंडिंग इस वर्ष प्राप्त करेगा। लेकिन 330 करोड़ लीटर वार्षिक इथेनाल ब्लेंडिंग प्राप्त करने के लिए अभी बहुत लंबा सफर तय करना है। मोलासेस, इथेनाल, तकनीक सहित कई बिन्दुओं पर अपने व्याख्यान दिये। पेट्रोल में 10 प्रतिशत इथेनाल ब्लेंडिंग से विदेशी मुद्रा की बहुत बचत होगी। सेमिनार को गौरव अवस्थी, प्रो. डी. स्वेन, श्री मुथुवेलवन आदि ने अपने व्याख्यान दिये।

# विदेशी मुद्रा बचाने को इथेनाल उत्पादन बढ़ाने पर जोर

कानपुर (एसएनबी)। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में मंगलवार को आयोजित एक सेमिनार में पेट्रोल पर खर्च हो रहे विदेशी मुद्रा को बचाने के लिए देश में इथेनाल उत्पादन बढ़ाने पर जोर दिया गया। कहा गया कि न केवल गन्ने के रस से बल्कि अन्य मोलासेस व फीड सामग्री से इथेनाल बनाना जरूरी होगा। अभी देश में पेट्रोल में 10 प्रतिशत तक इथेनाल मिश्रण अनुमत्य है, इसके विपरीत 5 फीसद इथेनाल की आपूर्ति का लक्ष्य ही हासिल किया जा सका है। सेमिनार में डिस्टिलरियों की आपरेशन अवधि साल में 270 दिन से और बढ़ाने की आवश्यकता जतायी गयी।

द शुगर टेक्नोलॉजिस्ट एसोसिएशन आफ इंडिया के सहयोग से शर्करा संस्थान द्वारा आयोजित सेमिनार का विषय था - 'टेक्नो-इकोनामिक वायबिलिटी ऑफ शुगरकेन जूस या बी हैवी मोलासेस एज अल्टरनेट फीड स्टॉक फार इथेनाल प्रोडक्शन'। सेमिनार का उद्घाटन मंडलायुक्त कानपुर सुभाष चंद्र शर्मा ने किया। द शुगर टेक्नोलॉजिस्ट एसोसिएशन के अध्यक्ष संजय

अवस्थी ने नई तकनीकों का प्रयोग करते हुए डिस्टिलरियों की आपरेशन अवधि बढ़ाने पर जोर दिया। कहा कि बायो कम्पोजिटिंग तकनीक का प्रयोग करने वाली डिस्टिलरियों को साल में 270 दिन काम करने की अनुमति होती है, परंतु ईंधन के रूप में इफ लुयेंट का प्रयोग करने वाले इन्सेनरेशन

## राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में आयोजित सेमिनार में हुआ रणनीतिक मंथन

ब्यायलर वाले डिस्टिलरियों को वर्ष में 330 दिन कार्य करने की अनुमति होती है।

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के निदेशक प्रो.नरेंद्र मोहन ने पेट्रोल में 10 प्रतिशत इथेनाल मिश्रण के लिए इथेनाल उत्पादन बढ़ाने पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि देश अब तक की सबसे अधिक लगभग 5 प्रतिशत ब्लेंडिंग का लक्ष्य ही प्राप्त कर सका है। आवश्यकतानुसार 330 करोड़ लीटर वार्षिक इथेनाल ब्लेंडिंग प्राप्त करने के लिए अभी बहुत

लंबा सफर तय करना है। उन्होंने कहा कि मोलासेस के द्वारा इथेनाल उत्पादन की अपनी सीमाएं हैं। अतः हमें अन्य संभावित फीड स्टॉकों का प्रयोग करते हुए इथेनाल उत्पादन पर कार्य करना है।

सेमिनार को एक्सेल इंस्टीट्यूट, पुणे के एमडी चिंचवालकर, शर्करा संस्थान के प्रो.डी. स्वेन, साहबाद सहकारी चीनी मिल लिमि, हरियाणा के सुशील कुमार व तमिलनाडु शुगर कॉर्पोरेशन के चीफ शुगर टेक्नोलॉजिस्ट मुथुवेलवन ने भी संबोधित किया।

## इथेनाल क्षमता बढ़ाने को सरकार देगी वित्तीय सहायता

भारत सरकार ने चीनी मिलों की इथेनाल क्षमता विकसित करने के लिए वित्तीय सहायता भी देने का निर्णय लिया है। इथेनाल उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए नयी मूल्य नीति की घोषणा भी की गयी है। पारंपरिक तरीके से उत्पादित इथेनाल का मूल्य ₹ 43.46 प्रति लीटर के समकक्ष बी हैवी मोलासेस से उत्पादित इथेनाल का मूल्य ₹ 53.43 व गन्ने के रस से उत्पादित इथेनाल का मूल्य ₹ 59.19 प्रति लीटर तय किया है।



# Sugar industry urged to boost ethanol production

PIONEER NEWS SERVICE ■ KANPUR

The Divisional Commissioner, SC Sharma while chairing the national seminar on 'Techno-economic viability of sugarcane juice or B Heavy molasses as alternate feed stock for Ethanol Production' jointly organised by National Sugar Institute, Kanpur and The Sugar Technologists Association of India on Tuesday said it was great on the part of NSI for taking lead in creating awareness about the issues related to value addition and production of clean and green energy. He called upon the sugar industry to come forward and boost ethanol production using other feed stocks rather than depending upon molasses only so as to achieve 10 per cent blending of ethanol in petrol. He said this was essential to reduce country's dependence on imports thus having energy security and preventing drain of valuable foreign exchange.

Sanjay Awasthi, President, The Sugar Technologists Association of India stressed on need for extending the duration of operation of distilleries by adopting newer technologies for effluent treatment. He said with the bio-composting route, the distilleries were allowed to work only for 270 days in a year, while installing Incineration Boilers where effluent was used as a fuel, the distilleries were permitted to operate 330 days in year; thus, the capacity utilisation can be increased by around 20 per cent, he added.

Addressing the session the Director of NSI, Prof. Narendra Mohan, presented overview of the ethanol demand-supply scenario of the country for



The Divisional Commissioner, SC Sharma chairs the National Sugar Institute workshop on Tuesday.

Pioneer

meeting 10 per cent blending requirements. He said as against the target, the country shall achieve the ever highest blending rate of about 5 per cent only during the year 2017-18 and thus there was a long way to go to meet the ethanol blending requirement of 330 crore litres per annum and which was growing further. He said production of ethanol through molasses had a limitation, thus there was a need to work on use of other potential feed stocks for ethanol production and building of ethanol production capacity which was about 290 crore litres per annum only at present. He said the Government of India had taken up the issue in a mission mode and recently policy decisions had been pronounced for giving financial assistance to sugar factories for developing ethanol capacities. He said in addition to this, for the first time, the government had pronounced a differential pricing policy for ethanol produced from different feed stocks as to boost its production. He said as against ethanol price of Rs. 43.46 per litre for ethanol produced from conventional route, the oil marketing companies

shall procure ethanol at a price of Rs. 52.43 and 59.19 per litre produced from B-Heavy molasses and sugarcane juice respectively.

He said currently 82 per cent of crude oil demands were met by imports resulting in huge import bill of about US\$ 70 billion and hence 10 per cent blending of ethanol in petrol will result in enormous savings. He added that since the country was producing sugar much more than the domestic consumption, this will encourage the sugar factories to reduce sugar production and go in for ethanol production thus serving one more important purpose of balancing the demand-supply situation of sugar.

Sanjay Desai, Managing Director, Excel Industries, Pune detailed the process of converting sugarcane juice to ethanol with minimum requirement of steam and power, side by side also producing lower effluent per litre of ethanol. He presented various models of processing various other feed stocks like broken rice, maize, corn for ethanol production with estimated cost of production.

He said presentation on use of alternate feed stocks and its economics for ethanol production were also made by Anuarag Goel, ISGEC, Noida, Prof. D Swain, NSI, Kanpur and Sushil Kumar, Shahabad Cooperative Sugar Mills Ltd, Haryana.

Prof. Swain emphasised upon diversion of B-Heavy molasses for ethanol production as it would not only require minimum capital expenditure in carrying out any changes in sugar factory or attached distillery but also due to the fact that overall revenue generation shall be higher at the present sugar and ethanol prices. He said since production of ethanol from cane juice shall require considerable changes in the processing houses, it will require significant capital expenditure and hence a long-term policy shall be required to ensure diversion of cane juice for ethanol production.

Muthuvelappan, Chief Sugar Technologist while welcoming the government initiative to boost ethanol production called upon the industry to take full advantage of the present policies and develop their sugar factories into 'Flexi Factories' producing sugar and ethanol as per demand and economics.

He presented the economics of one such model ensuring balancing of demand-supply situation of sugar on the one hand and enhancing ethanol production of other hand. He called upon the sugar factories to set up more 'Smart Distilleries' working on various feed stocks and producing not only ethanol but also the ethanol derivatives to reduce dependency on petrol and petroleum products.



# नई तकनीक अपना 20 % बढ़ाएं डिस्टिलरी की क्षमता

काजपुर / कार्यालय संवाददाता

## सेमिनार

बायो कम्पोजिटिंग तकनीक का प्रयोग करने वाले डिस्टिलरियों की वर्ष में 270 दिन काम करने की अनुमति दी जाती है। हालांकि, इंप्लुएंटेड का प्रयोग करने वाले इंसेनरेशन ब्वायलर युक्त डिस्टिलरियों को 330 दिन कार्य करने की अनुमति है। कार्यक्षमता 20 फीसदी बढ़ जाती है। पुरानी तकनीक वाली डिस्टिलरियों को भी इसका इस्तेमाल करना चाहिए। यह बात द शुगर टेक्नोलॉजिस्ट एसोसिएशन ऑफ इंडिया के अध्यक्ष संजय अवस्थी ने कही।

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में मंगलवार को आयोजित राष्ट्रीय सेमिनार का विषय 'टेक्नो-इकोनामिक वायबिलिटी ऑफ

● शर्करा संस्थान में आयोजित किया गया राष्ट्रीय सेमिनार

● कमिशनर ने कहा, चीनी मिलें अधिक से अधिक इथेनॉल का निर्माण करें

शुगरकेन जूस व बी हैवी मोलासेसएस अल्टरनेट फीड स्टॉक फॉर इथेनॉल प्रोडक्शन' रहा। शुभारंभ कमिशनर सुभाष चंद्र शर्मा, संजय अवस्थी और संस्थान के निदेशक प्रो. नरेंद्र मोहन ने किया। कमिशनर ने कहा कि चीनी मिलें अधिक से अधिक इथेनॉल का निर्माण करें। इस मौके पर चिंचबालकर, गौरव अवस्थी, प्रो. डी स्वेन, मुथुवेलवन, एके गर्ग आदि मौजूद रहे।